International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 24-01-2026, Accepted: 23-02-2026, Published: 10-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 219-220

'अमरूद का पेड़': पारिवारिक विघटन और प्रतीकात्मक अध्ययन

सिंटू प्रसाद
शोधार्थी, विश्व–भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
"अमरूद का पेड़" ज्ञानरंजन द्वारा रचित हिंदी कथा–साहित्य की एक मार्मिक और बहुस्तरीय कहानी है, जिसमें एक साधारण घरेलू प्रसंग के माध्यम से भारतीय समाज की जटिल मानसिकता, अंधविश्वास की गहरी जड़ें, संयुक्त परिवार के विघटन और पीढ़ियों के बीच वैचारिक संघर्ष को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी का केंद्रीय प्रतीक—अमरूद का पेड़—स्मृतियों, पारिवारिक एकता, आशंकाओं और अंततः विघटन का वाहक बन जाता है। प्रस्तुत शोध–आलेख में कहानी के सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक तथा प्रतीकात्मक आयामों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसमें मूल कथनों को संदर्भित रखते हुए उनकी व्याख्या की गई है।

मूल शब्द: ज्ञानरंजन, हिंदी कथा–साहित्य, प्रतीकात्मकता, संयुक्त परिवार, अंधविश्वास, पीढ़ियों का संघर्ष,

प्रस्तावना
स्वतंत्रता–उत्तर भारतीय समाज तीव्र संक्रमण के दौर से गुज़रा। संयुक्त परिवार की परंपरा, सामाजिक नैतिकता और सांस्कृतिक मूल्य आधुनिकता की लहर से प्रभावित हो रहे थे। शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता के प्रसार के बावजूद समाज अंधविश्वास और रूढ़ियों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सका। "अमरूद का पेड़" इसी संक्रमणकालीन मानसिकता की कथा है। यह कहानी किसी बड़े सामाजिक आंदोलन की प्रत्यक्ष चर्चा नहीं करती, बल्कि घरेलू जीवन की सूक्ष्म घटनाओं के माध्यम से व्यापक सामाजिक यथार्थ को उद्घाटित करती है। एक साधारण–सा पेड़ यहाँ सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्श का केंद्र बन जाता है।

कथानक का संक्षिप्त विवेचन
कहानी का आरंभ घर के आँगन में स्थित एक हरे–भरे अमरूद के पेड़ से होता है। यह पेड़ केवल प्रकृति का अंश नहीं, बल्कि परिवार की जीवंत स्मृतियों का केंद्र है। बच्चों की किलकारियाँ, झूले की गति और सामूहिक उल्लास उसी से जुड़ा है।
किंतु कथा में निर्णायक मोड़ तब आता है, जब बाबू कन्हैया लाल की पत्नी लेखक की माँ से कहती है—"पश्चिम की तरफ अगर मकान का मुखड़ा हो और सामने ही अमरूद का पेड़ तो 'राम–राम बड़ा अशुभ होता है।"[1] यह वाक्य कहानी की समस्त त्रासदी का बीज है। माँ, जो शिक्षित और सामाजिक रूप से जागरूक है, इस कथन से विचलित हो उठती है। यहीं से अंधविश्वास और आधुनिक चेतना का अंतर्द्वंद्व प्रारंभ होता है।
आइए, अब हम कुछ प्रमुख बिंदुओं के आलोक में अपने विषय को अधिक गहराई और विस्तार से समझने का विनम्र प्रयास करें। इन बिंदुओं के माध्यम से न केवल विषय की मूल भावना स्पष्ट होगी, अपितु उसके विविध आयाम भी हमारे समक्ष क्रमशः उद्घाटित होते चले जाएंगे। जब हम किसी विषय को सुव्यवस्थित रूप से बिंदुवार समझते हैं, तब उसके सूक्ष्म तत्वों पर भी हमारा ध्यान जाता है और विचारों की एक सुसंगठित धारा निर्मित होती है। अतः निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं के सहारे हम विषय के मर्म तक पहुँचने का प्रयास करेंगे, जिससे उसका व्यापक स्वरूप अधिक स्पष्ट और प्रभावपूर्ण रूप में हमारे सामने उपस्थित हो सके।

प्रगतिशील परिवेश और अंतर्विरोध
लेखक अपने परिवार की पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए कहता है— "सत्याग्रह के दिनों में। पिताजी खुद राजनैतिक–सामाजिक उदारता वाले आदमी हैं। हमारी एक बुआ ने विवाह नहीं किया और पढ़ने–लिखने में ही उन्होंने अपनी जिंदगी डुबो दी पर समाज उन्हें कोई चुनौती देने का साहस नहीं कर सका। एक को छोड़ हम सभी भाइयों में खिलाड़ीपन और मुझे तरस आ गया कि कन्हैया लाल की बड़ी पत्नी कैसी बेहूदा–फूहड़ बात कहती है।"[2]
यह कथन दर्शाता है कि परिवार वैचारिक रूप से प्रगतिशील रहा है। यहाँ स्त्री–स्वतंत्रता और शिक्षा को सम्मान मिला है। परंतु विडंबना यह है कि इसी प्रगतिशील परिवेश में अंधविश्वास की छाया प्रवेश कर जाती है।
आलोचनात्मक दृष्टि से यह भारतीय समाज की द्वैत मानसिकता का सशक्त चित्रण है— जहाँ आधुनिकता और परंपरा एक–दूसरे के साथ सह–अस्तित्व में रहते हैं, पर संकट की घड़ी में परंपरागत संस्कार अधिक प्रभावी हो जाते हैं। संयुक्त परिवार का विघटन और मनोवैज्ञानिक स्थानांतरण 1960 के दशक में संयुक्त परिवार व्यवस्था के टूटने की प्रक्रिया तेज हुई। कहानी में भी बड़े भाई द्वारा अलग चूल्हा–चौका करने की स्थिति उत्पन्न होती है। पिता कहते हैं— "सबसे बड़े भाई चूल्हा–चौका अलग करने के लिए तनाव पैदा कर रहे हैं... तुम्हारी माँ अमरूद का पेड़ कटाने को कहती हैं।"[3] यहाँ स्पष्ट होता है कि परिवार के भीतर वास्तविक समस्या संबंधों की दरार है। किंतु माँ इस दरार का कारण अमरूद के पेड़ को मान बैठती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह 'स्थानांतरण' की प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति अपनी आंतरिक पीड़ा का कारण किसी बाहरी वस्तु में खोजता है। माँ वास्तविक कारणों—अहम, संवादहीनता, आर्थिक तनाव—का सामना नहीं कर पाती; अतः वह पेड़ को अशुभ घोषित कर देती है।

प्रतीकात्मक संरचना: अमरूद का पेड़
अमरूद का पेड़ कहानी में बहुस्तरीय प्रतीक है। पहले स्तर पर वह स्मृति का प्रतीक है— बचपन की निश्छलता और सामूहिक जीवन का संकेत। दूसरे स्तर पर वह संयुक्त परिवार की छाया है— एकता और सुरक्षा का भाव। तीसरे स्तर पर वह आरोपित अशुभता का प्रतीक है— जब वही पेड़ विघटन का कारण ठहरा दिया जाता है। लेखक ने पेड़ का मानवीकरण करते हुए एक मार्मिक बिंब रचा है। कल्पना की जाती है कि यदि पेड़ बोल सकता, तो वह कहता—अम्मा, मैं अशुभ नहीं हूँ... मैं तो तुम्हारे आँगन की छाँव हूँ, तुम्हारे बच्चों की किलकारियाँ हूँ... मुझे मत काटो अम्मा!

यह अंश कहानी का नहीं बस एक भावनात्मक स्वरूप के साथ बात को समझाने के लिए काल्पनिक शब्दों का सहारा लिया गया परंतु हमें एक बार इस पर विचार करना चाहिए। क्या पेड़ की आत्मा अपने जड़ो की संवेदना से ये कहने का असफल प्रयास नहीं कर रहा होगा? जब हम ऐसे प्रश्नों पर विचार करते तब यहाँ पेड़ एक जीवंत चरित्र बन जाता है। साहित्य की शक्ति इसी में है कि वह प्रकृति को भी संवेदना प्रदान कर देता है। मातृ–चेतना और असुरक्षा माँ का चरित्र कहानी की आत्मा है। वह न पूरी तरह रूढ़िवादी है और न पूर्णतः आधुनिक। वह एक संक्रमणशील स्त्री है, जो परिवार को टूटते हुए देख नहीं पाती।

जड़ों को उखाड़, संबंधों को जोड़ने की चाह

पेड़ को कटवाने की उसकी इच्छा वस्तुतः परिवार को बचाने का अंतिम और व्याकुल प्रयास है। उसे विश्वास है कि यदि अशुभता के उस कथित कारण को समाप्त कर दिया जाए, तो शायद विखंडित होता परिवार पुनः एक सूत्र में बँध सके। समय के अविराम प्रवाह के साथ लेखक की माँ का अंधविश्वास धीरे–धीरे एक दृढ़ आस्था का रूप लेने लगा। लेखक इस संदर्भ में लिखते हैं— "मैंने पाया कि वह भी जो माँ के चेहरे पर क्षणजीवी हुआ करता था, अब गहरा गया है। माँ का मन यह मान बैठा था कि बड़ी बहू की अलगाव भावना, सबसे छोटे का निठल्लापन, खुद उनकी बीमारी और लोगों का धंधे से बिखर जाना और कुछ नहीं है, बल्कि बहुत दिनों तक दरवाजे पर उसी अमरूद के पेड़ लगे रहने का दुष्परिणाम है, जिसे काफ़ी पहले ही लोगों ने अशुभ बताया था।"[4]

यहाँ उपयुक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि माँ की आस्था तर्कसंगत भले न हो, पर उसमें करुणा और असहायता की निष्कपट सच्चाई निहित है। उसका निर्णय आत्म–प्रवंचना प्रतीत हो सकता है, किंतु उसके अंत:करण की वेदना निर्मम यथार्थ है। वह जो कुछ भी कर रही है, परिवार को पुनः एकजुट देखने की आकांक्षा में कर रही है। पेड़ की जड़ों को उखाड़ फेंकने में उसे मानो यह प्रतीति होती है कि जैसे वह अपने बिखरे हुए परिवार की भावनात्मक जड़ों को फिर से जोड़ सकेगी, और सब एक साथ, स्नेह और संतोष के साथ, पुनः जीवन यापन कर सकेंगे।

पेड़ का कटना: प्रतीकात्मक अंत:

अंततः अमरूद का पेड़ कट जाता है। यह घटना केवल एक वृक्ष के भौतिक विनाश की कथा नहीं, अपितु स्मृतियों से भरे एक संपूर्ण युग के अवसान का संकेत है। वह पेड़, जो वर्षों तक अपने फल और शीतल छाया से घर–आँगन को स्नेहिल आच्छादन देता रहा, अंततः अंधविश्वास का शिकार हो जाता है— और विडंबना यह कि उसका संहार किसी बाहरी शक्ति ने नहीं, बल्कि उसी घर की रूढ़िवादी मानसिकता ने किया। पेड़ के कट जाने के बाद परिवार की स्थिति में वास्तविक परिवर्तन आता है या नहीं, यह कथा स्पष्ट नहीं करती; किंतु माँ को एक प्रकार की मानसिक शांति अवश्य प्राप्त होती है। यह शांति किसी ठोस समाधान की परिणति नहीं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक संतुलन की उपज है— एक ऐसी तसल्ली, जो यथार्थ को नहीं बदलती, केवल मन को क्षणिक आश्वस्त कर देती है।

पेड़ के कटने के साथ ही आँगन का वातावरण भी परिवर्तित हो उठता है। कहानी के अंत में लेखक लिखते हैं— "सूरज पिछवाड़े के पीपल के ऊपर आ रहा था और जहाँ अमरूद की जड़ें थीं, वहाँ धूप का एक चकत्ता तेजी से बड़ा होता दीख पड़ा।"[5] यह फैलती हुई धूप मानो एक रिक्तता को उजागर करती है— वह रिक्तता जो कभी सघन छाया से भरी थी।

आलोचनात्मक दृष्टि से यह कहानी अनेक प्रश्नों को जन्म देती है— क्या जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान बाह्य प्रतीकों के विनाश में निहित है? क्या अंधविश्वास मानसिक स्थिरता का साधन बन सकता है? लेखक इन प्रश्नों का कोई प्रत्यक्ष उत्तर नहीं देता; वह पाठक को विचार के उस द्वार पर छोड़ देता है, जहाँ आत्ममंथन ही एकमात्र मार्ग है।

आधुनिकता और परंपरा का द्वंद्व

कहानी में पिता का तार्किक दृष्टिकोण और माँ की आस्था दो ध्रुवों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह संघर्ष प्रत्यक्ष नहीं, बल्कि अंतर्मुखी है। अंततः निर्णय माँ के पक्ष में जाता है, जो यह दर्शाता है कि भारतीय समाज में भावनात्मक और सांस्कृतिक शक्तियाँ अभी भी प्रबल हैं। यह द्वंद्व केवल एक परिवार की समस्या नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक यथार्थ का दर्पण है।

कथा–शिल्प और भाषा कहानी की भाषा सहज, मार्मिक और संवेदनशील है। संवादों का प्रयोग कथा को प्रामाणिकता प्रदान करता है। लेखक ने अनावश्यक अलंकरण से बचते हुए भावों की तीव्रता को प्रमुखता दी है। पेड़ का मानवीकरण कथा–शिल्प की उल्लेखनीय विशेषता है, जो कहानी को प्रतीकात्मक ऊँचाई देता है।

ज्ञानरंजन ने "अमरूद का पेड़" को एक बहुआयामी कथा के रूप में प्रस्तुत किया है, जिसमें अंधविश्वास, पारिवारिक विघटन, सामाजिक संक्रमण और मातृ–चेतना की मर्मांतक त्रासदी एक साथ सजीव हो उठती है। यहाँ अमरूद का पेड़ मात्र प्रकृति का अंश नहीं, अपितु स्मृतियों, आशाओं और धीरे–धीरे दरकते संबंधों का संवेदनशील प्रतीक बन जाता है। उसका कट जाना एक बाह्य घटना भर है, किंतु उसका वास्तविक अर्थ परिवार के भीतर घटित उस मौन विघटन में निहित है, जो शब्दों से अधिक अनुभूतियों में व्यक्त होता है। यह कहानी पाठक को आत्ममंथन के लिए बाध्य करती है कि संबंधों की दरारें प्रतीकों के विनाश से नहीं, बल्कि तर्क, संवाद और आत्मचेतना के आलोक से भरी जा सकती हैं।

इस प्रकार यह कथा हिंदी साहित्य में संवेदनशील लेखनी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जो सामाजिक यथार्थ को मार्मिकता और आलोचनात्मक दृष्टि के साथ रूपायित करती है। वर्तमान समय—जब हम 2026 के परिवेश में जी रहे हैं— ऐसी रूढ़ मान्यताओं से मुक्ति की माँग करता है। परिवारों में बढ़ती दूरियाँ और विखंडन की प्रवृत्ति हमें पुनः अपने मूल जीवन–मूल्यों की ओर लौटने का आह्वान करती है। वे मूल्य, जिनके आधार पर हमारा सामाजिक ताना–बाना निर्मित हुआ है, आज पुनर्स्थापना की प्रतीक्षा में हैं। हमें स्मरण रखना चाहिए कि हम उस भारतभूमि के निवासी हैं, जहाँ प्रेम और स्नेह के बीज ही भविष्य की छाया और दिशा का आधार बनते हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना तभी सार्थक हो सकती है, जब हम संकीर्ण और रूढ़ विचारधाराओं से ऊपर उठकर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा करें, अपनी योग्यता के अनुरूप लक्ष्य साधें और पारस्परिक सद्भाव को जीवन का मूल मंत्र बनाएँ। तभी यह विचार केवल वाक्य नहीं, बल्कि जीवंत यथार्थ बन सकेगा।

संदर्भ सूची

1. ज्ञानरंजन, प्रतिनिधि कहानियाँ, रामकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ संख्या–9
2. ज्ञानरंजन, प्रतिनिधि कहानियाँ, रामकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ संख्या–9
3. ज्ञानरंजन, प्रतिनिधि कहानियाँ, रामकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ संख्या–12
4. ज्ञानरंजन, प्रतिनिधि कहानियाँ, रामकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ संख्या–13–14
5. ज्ञानरंजन, प्रतिनिधि कहानियाँ, रामकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, संस्करण–2021, पृष्ठ संख्या–14